इंडोनेशिया के जंगल विनाश में उद्योग की भूमिका

इंडोनेशिया दुनिया के एक-तिहाई कटिबंधीय (ट्रॉपिकल) जंगलों का घर है और बदकिस्मती से यहां जंगल विनाश की दर भी सबसे अधिक है। ऐसा माना जाता था कि इंडोनेशिया में जंगलों के विनाश का प्रमुख कारण पाम ऑइल प्लांटेशन हैं मगर हाल के अध्ययन से पता चला है कि सबसे ज़्यादा जंगलों का सफाया रेशा उत्पादन के लिए किए गए प्लांटेशन की वजह से हुआ है।

ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैण्ड विश्वविद्यालय के इकॉलॉजीवेत्ता लिआन पिन कोह ने एसोसिएशन फॉर ट्रॉपिकल बायोलॉजी एंड कंज़र्वेशन के एक सम्मेलन में प्रस्तुत अपने शोध पत्र में बताया है कि इंडोनेशिया में 2000 से 2010 के बीच कुल 1.47 करोड़ हैक्टर जंगल का विनाश हुआ है। इसमें से 12.8 प्रतिशत रेशा प्लांटेशन्स के लिए, 12.5 प्रतिशत लकड़ी उत्पादन के लिए और 6.8 प्रतिशत पाम ऑइल प्लांटेशन के लिए साफ हुआ है। शेष जंगल का सफाया खनन व अन्य कार्यों के लिए किया गया है। कुल जंगल विनाश में से 45 प्रतिशत का श्रेय उद्योगों को लीज़ पर दिए गए जंगलों को जाता है।

कोह व उनके साथियों ने सुमात्रा व कालीमंतन समेत इंडोनेशिया के पांच प्रमुख वन क्षेत्रों में वन विनाश और प्लांटेशन, कटाई और खदानों के लिए लीज़ पर दी गई ज़मीन के आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रेशा प्लांटेशन का वन विनाश में इतना अधिक योगदान रहा है जबकि अब तक इसका सारा दोष पाम ऑइल प्लांटेशन्स के मत्थे मढ़ा जाता रहा है। रेशे के लिए आम तौर पर तेज़ी से बढ़ने वाले पेड़ लगाए जाते हैं।

वैसे 2011 में इंडोनेशिया सरकार ने कंपनियों को जंगल साफ करने के परमिट जारी करना बंद कर दिया था। मगर यह प्रतिबंध उस समय तक जारी हो चुके लायसेंसों पर लागू नहीं होता। लिहाज़ा, जंगल कटाई पर प्रतिबंध से वन विनाश की रफ्तार धीमी नहीं हुई है। मगर इस प्रतिबंध से यह संकेत तो मिलता ही है कि सरकार इस समस्या के प्रति सचेत हो चुकी है और कुछ करना चाहती है। पुराने परमिट समाप्त हो जाने के बाद इस प्रतिबंध का असर दिखने लगेगा, ऐसी उम्मीद है। वन संरक्षण के काम में लगे संगठनों को उम्मीद है कि नवगठित सरकार इस नीति को जारी रखेगी। ***(स्रोत फीचर्स)***